SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.04

जैनेन्द्र के उपन्यासों पर फ्रायड का प्रभाव

डॉ.खुशबू सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
ज्वाला देवी विद्या मंदिर पी.जी. कॉलेज,कानपुर

सारांश :
हिंदी साहित्य के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार ने अपने उपन्यासों में मानव-मन की जटिलताओं, अंतर्द्वंद्वों तथा अवचेतन भावनाओं का अत्यंत सूक्ष्म एवं कलात्मक चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में जैनेन्द्र के उपन्यासों पर सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी सिद्धांतों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से 'परख', 'कल्याणी', 'सुखदा', 'त्यागपत्र' तथा 'विवर्त' जैसे उपन्यासों के पात्रों एवं घटनाओं का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि दमित कामनाएँ, कुंठाएँ, स्वप्न, मानसिक संघर्ष तथा उदात्तीकरण जैसी फ्रायडीय अवधारणाएँ उनके कथानक और चरित्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जैनेन्द्र ने बाह्य घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के अंतर्जगत को अधिक महत्व दिया है, जिससे उनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक गहराई और कलात्मक प्रभावशीलता उत्पन्न हुई है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जैनेन्द्र हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के सशक्त हस्ताक्षर हैं तथा उनके साहित्य में फ्रायडीय मनोविज्ञान का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मुख्य शब्द :जैनेन्द्र कुमार, फ्रायडवाद, मनोविश्लेषण, अवचेतन मन, दमित कामनाएँ, मनोवैज्ञानिक उपन्यास

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की कीर्ति का आधार मानव-मन की गहरी पैठ है। किसी भी समय के साहित्य की सार्थकता को उसके द्वारा सामाजिक जीवन की में किए जाने वाले हस्तक्षेप तथा उठाए गए प्रश्नों से आका जा सकता है। निर्विवाद रूप से प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक जीवन के साथ प्रासंगिक हैं, समरस हैं। पाठक रचनाओं में अपने को , आस-पास को, अपने समाज को पाकर आत्मविभोर हो उठता है। ऐसे साहित्य रचना से वह तत्क्षण तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इस प्रकार का आत्मलगाव तभी संभव हो पाता है जब लेखक की दृष्टि पैनी हो, मस्तिष्क मानव मन का पारखी हो। प्रेमचंद अपने उपन्यासों गोदान, सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन आदि में अपने पात्रों के माध्यम से झांकने का सफल प्रयास किया है । प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यासकारों देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी आदि के तिलिस्मी-ऐयारी-जासूसी उपन्यासों में मानव-मन एवं मानव जीवन की अभिव्यक्ति का सर्वथा अभाव है । वहीं प्रेमचंद के सभी उपन्यासों में पात्रों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप के आधार पर ही बाह्य क्रिया-कलाप घटित होते हैं । प्रेमचंद के उपन्यासों की मनोवैज्ञानिक परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उसमें जीवंत तथा नवप्रयोग करते हुए हिंदी साहित्य में जैनेन्द्र का आगमन हुआ। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों में मानव-मन के गूढ़ रहस्यों तथा अंतर्मन की गहराइयों तक पहुचने का सफल प्रयास किया । प्रेमचंद के उपन्यासों के पात्र मनुष्य के व्यक्तित्व का बहुआयामी रूप प्रस्तुत करते हैं किन्तु जैनेन्द्र के उपन्यासों के पात्र विशिष्ट रूप से फ्रायडवादी तथा गेस्टाल्टवादी मनोभावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड ने मानव मन की विभिन्न परिस्थितियों को प्रभावित करने में कामप्रवृत्ति को निर्णायक तत्त्व

स्वीकार किया। फ्रायड के अपने सबल तर्कों के माध्यम से यह प्रमाणित करने की चेष्टा की, कि प्रत्येक मानसिक विकृति के मूल में दमित कामवृत्तियाँ ही हैं। मनुष्य का मानसिक संतुलन इसलिए नष्ट हो जाता है कि उसकी दमित कामेच्छाएँ अचेतन से निकलकर चेतन के क्षेत्र में आकर अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर देती हैं। फ्रायड के दमित कामेच्छा और तद्जन्य प्रभाव का स्पष्ट दर्शन जैनेन्द्र के उपन्यासों में मिलता है। जैनेन्द्र के पात्रों में कुंठा, असाधारण कामजनित दमित हताशा एवं आंशिक मनोविकृति का स्पष्ट दर्शन किया जा सकता है।

'परख' जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास है। परख में जैनेन्द्र के उपन्यास कला की झलक मिलती है। सत्यधन का आदर्शवादी मन वकालत की शिक्षा का सदुपयोग इस मिथ्यावादी व्यवसाय में न करने का निर्णय ले बैठता है। शहरी जीवन के चकाचौध से दूर रहकर न्यायलय की छल-छद्म भरी जिंदगी से अपने को विरत रहकर दीन और साधनहीन लोगों की क़ानूनी सहायता करना चाहता है। यहाँ सत्यधन में प्रेमचंद के आदर्शोंमुखी यथार्थवाद की झलक दिखाई पड़ती है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक परम्परा का स्पष्ट प्रभाव सर्वत्र विद्यमान है। उनके सभी पात्रों असाधारणता, दमन तथा कामभाव के दमन के उपरांत पैदा हुई अनेक विवशताएँ हैं। परख में बिहारी और कट्टो के जिस प्रकार के विवाह की कल्पना की गई है। वह सर्वथा अव्यावहारिक तथा अप्रासंगिक लगता है। "**बाबूजी बिहारी ने ब्याह कर लिया है। वह कट्टो।।बाबूजी चौके क्या?वह कट्टो लड़की आपने सुना होगा। बाबूजी के मुँह से निकला बिहारी।" बिहारी ने अविचलित अकम्पित स्वर में कहा 'जी'। हमारा ब्याह हुआ है इसलिए हम दूसरा ब्याह नहीं करेंगे। साथ रहे रहे न रहे न रहे कुछ बात नहीं क्योंकि हम हमेशा साथ हैं। "यह पागलपन ख़तम करो। जाना हो जाओ पर यह पागलपन मैं नहीं सुनना चाहता। मैं तुम्हे किसी बात से नहीं रोकूंगा, पर ऐसी दुनिया से परे की बात मेरे सामने न किया करो।" तो हम अलहदा होते हैं?हाँ प्रणाम बिहारी ने जुड़े दोनों हाथ थामकर झुके मस्तक पर चुम्बन लिया। कट्टो ने प्रणत भाव से उसे स्वीकार किया ।और दोनों फिर अलग-अलग राह चल दिए न जाने कब मिलने के लिए।**

जब हम परख में उल्लिखित उपर्युक्त प्रसंग का विश्लेषण करते हैं तो फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिकता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। यहाँ बिहारी और कट्टो के दमित काम-वासना के उदात्तीकृत रूप की बात सजीव होकर चित्रित की गई है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक दमित इच्छा अपने साथ भावावेग रखती है। ये भावावेग अपने प्रवाह की खोज में सदैव तत्पर रहते हैं इस प्रकार के भावावेग की समाजानुमोदित नैतिक प्रणालियों से प्रवाहित होने की प्रक्रिया को उदात्तीकरण कहा जाता है ।बिहारी और कट्टो के परस्पर वैवाहिक सम्बंद्ध उसके इसी प्रकार के भावावेग हैं। जब हम आधुनिक मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदाय और उनके मुख्य सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र के उपन्यासों को देखते हैं तो उन्हें प्रत्यक्षतः मनोवैज्ञानिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ पाते हैं। जैनेन्द्र के उपन्यास 'कल्याणी' में फ्रायड के स्वप्न विज्ञान की स्पष्ट झलक मिलती है। फ्रायड के अपने अध्ययन में यह सिद्ध किया कि स्वप्न हमारी कामवासनाओं की पूर्ति के अतिरिक्त और कुछ नही है। कल्याणी अपने पति असरानी के निर्मम व्यवहार से क्षुब्ध है और उसे यह आशंका है कि वह उसकी हत्या भी कर सकता है। एक रोज वह आधी रात सपने से चौक कर वह जागी। सन्नाटा था , बत्ती मद्धम जल रही थी , सपने सिर में घूम रहे थे। तभी सुनती क्या है जैसे गुसलखाने में कुछ फुसफुस आवाजें हो रही हैं, पर कान चौकन्ने थे और चेतना उदीप्त थी। कुछ देर में वे आवाजें जैसे प्रबल हुई जैसे किसी स्त्री-पुरुष में बहस छिड़ी हुई हो बहस जरा में बखेड़ा बन गई। अब कुछ साफ सुनाई देने लगा- "**एक पुरुष कंठ ने कहा – चुप नहीं रहेगी क्या। स्त्री कंठ ने उत्तर दिया - मैं नहीं रहूंगी चुप कभी नहीं। मुझको मार क्यों नहीं डालते लेकिन चुप मैं नहीं रहूंगी, मैं नहीं , नहीं , हाँ घोंटो गला , नहीं ? तो ले मत रह चुप। मैंने कहा आप मन से उस दु:स्वप्न को निकाल ही दीजिए।**" उपन्यास के उक्त वर्णन में पात्र के स्वप्न के माध्यम से फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत की सुंदर झांकी मिलती है। फ्रायड ने मृत्यु भय पर विशदाता से लिखा है। और जैनेन्द्र की जिज्ञासाओं को वहाँ समाधान मिलना संभव है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में जो आकर्षण और प्रभावपूर्णता है उसका श्रेय घटनाओं को ही नहीं उन विचारों को है, उन उद्गारों को हैं जिन्हें पात्रों ने जब-तब प्रकट किया है। पात्रों के इस तरह के उद्गार मन के अंतरतम को बेधता हुआ अंतर्द्वंदों की सीमा को तोड़ता हुआ ही बाहर जाता है। सामाजिक रीतियों-विवाह, प्रेम, व्यापार, राजनीति सभी दशाओं में उपन्यासकार ने पात्रों के मन को अतल गहराई तक टटोलने की सफल चेष्टा की

है। विभिन्न उपन्यासों त्यागपत्र, व्यतीत , अनामस्वमी, सुखदा, परख, कल्याणी, विवर्त में उपर्युक्त स्थलों का सूक्ष्तम चित्रण मानवीय मूल्यों के धरातल पर करने का प्रयास जैनेन्द्र ने किया है। जैनेन्द्र एक विचारक एवं चिन्तक कलाकार हैं। जब उनकी लेखनी अपने उपन्यास के विभिन्न पात्रों के चरित्र में सजीवता लाने के लिए उठती है तब अनायास ही उनके मन के सूक्ष्तम भावों का एक्सरे करती हुई घटना चित्र लाकर पटल पर प्रस्तुत कर देती है। प्रेमचंद के ग्रामीण सामाजिक सरोकारों की परम्परा से हटकर जैनेन्द्र के उपन्यास कथा के मूल में स्त्रीत्व-पुरुषत्व विवाह, प्रेम, हिंसा-आहिंसा, घर-बाहर, की मूल समस्याएँ हैं। इन उपन्यासों में पात्रों की संख्या बहुत थोड़ी है। पात्रों के कर्म -व्यापार एवं क्षेत्र भी प्रेमचंद एवं दूसरे उपन्यासकारों के कर्मक्षेत्र से बहुत छोटा है। जैनेन्द्र के इन लघु उपन्यासों में भावभूमि की ही प्रधानता है। परख और सुनीता में जहाँ औपन्यासिक पक्ष की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है वहीँ कहानी में मनोवैज्ञानिकता का भी समावेश है। विवर्त का जितेन क्रांति करना चाहता है। वह अमीरों का धन गरीबों में बाँट देना चाहता है। अमीरों के प्रति इस आक्रोश के पीछे भुवनमोहिनी के प्रति उसका असफल प्रेम तथा उससे उत्पन्न कुंठा तथा दमित वासना के उदात्तीकरण को साफ़-साफ़ लक्षित किया जा सकता है। जैनेन्द्र के समस्त उपन्यासों के अनुशीलन व् विश्लेषण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की सशक्त परम्परा के पुरस्कर्ता तथा वाहक हैं। उनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अत्यंत सुन्दर एवं सर्जनात्मक निरूपण देखने को मिलता है।

सन्दर्भः-

1. परख, भारतीय ज्ञानपीठ (नई दिल्ली), पृ० ४०
2. परख, भारतीय ज्ञानपीठ (नई दिल्ली), पृ० 99
3. कल्याणी, पृ० 13, 92, 93
4. व्यतीत, पृ० 7, 100
5. जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिकपरक शैली, तात्विक अध्ययन, डॉ० लक्ष्मीकान्त शर्मा, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव- भारत भूषण अग्रवाल दिग्दर्शन चरण जैन, नई दिल्ली।
7. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान- देवराज उपाध्याय, इलाहाबाद, साहित्य भवन।

Cite this Article:

डॉ.खुशबू सिंह, "जैनेन्द्र के उपन्यासों पर फ्रायड का प्रभाव" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.44-46, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.खुशबू सिंह

For publication of research paper title

जैनेन्द्र के उपन्यासों पर फ्रायड का प्रभाव

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.04